रावण के दस सिर

ब्रह्माकुमार अशोक आडवाणी, अम्बिकापुर

हर वर्ष दशहरे के शुभ अवसर पर, भारत के सभी छोटे-बड़े शहरों में और कहीं-कहीं भारत से बाहर भी रावण का पुतला जलाने पर लाखों-करोड़ों रुपये खर्च किए जाते हैं लेकिन क्या हम जानते हैं कि रावण कौन है और उसके दस सिर कौन-से हैं? क्योंकि असलियत को जानने के बाद ही हम इनका विनाश करने में समर्थ हो सकेंगे। नहीं तो हम कागज़ का पुतला फूँकने में ही लगे रहेंगे और हमारी इस अज्ञानता का फायदा उठाकर असली रावण फलता-फूलता रहेगा। वास्तव में, असली रावण है मानव के भीतर बैठे दस विकार। इन विकारों को जलाए बिना, दशहरे के त्योहार की उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह ही लगे रहेंगे और साधनों के अभाव में जूझती दुनिया ऐसे उत्सवों पर समय, शक्ति, धन आदि कीमती खज़ाने लुटा-लुटाकर और भी अभावग्रस्त होती जाएगी। आइये टटोलें अपने आपको कि निम्नलिखित दस सिरों में से कोई हमें लगा हुआ तो नहीं है, यदि हो तो इस दशहरे पर रावण के पुतले के साथ उसे भी जला दें –

काम – यह नरक का द्वार कहलाता है और मनुष्य को चमड़ी के आकर्षण का दास बनाकर उसकी बुद्धि, मानसिक बल, पवित्रता और शारीरिक शक्ति का हरण कर लेता है। काम के वशीभूत व्यक्ति बेशर्म होकर देश और समाज के लिए कई समस्यायें पैदा कर देता है, कइयों के लिए परपीड़क बन जाता है।

क्रोध – जैसे ऊँचे भवन से गिरने पर मानव के हाथ-पैर टूट जाते हैं इसी प्रकार, क्रोध करना भी शान्ति रूपी ऊँची स्थिति से आत्मा को गिराकर उसे अशान्त, दु:खी और रोगी बनाने के समान है। क्रोधी व्यक्ति एकाग्रता, स्मृति, विवेक, निर्णयशक्ति, सहनशीलता, नम्रता,कर्त्तव्यपरायणता तथा कार्यक्षमता जैसे महान गुणों को नष्ट कर देता है।

लोभ – लोभ को 'पाप का बाप' कहा जाता है। लोभी व्यक्ति सोते-जागते पदार्थों और धन के संग्रह के ही सपने देखता रहता है और इसके लिए बड़े-से-बड़े अपराध करने में भी नहीं हिचकता है। समाज में चोरी, मिलावट, रिश्वत, शोषण, अन्याय, पक्षपात, संग्रहवृत्ति, छीना-झपटी आदि का कारण यह लोभ ही है। लोभी की मन:स्थिति सदा कंगाल रहती है, वह तृप्ति का सुख नहीं ले पाता।

मोह – व्यक्ति या वस्तु के मोह में अन्धा होकर व्यक्ति कइयों के हक मार लेता है। मोहवश अकर्त्तव्य कार्य करता है। मोह का जाला आंखों पर पड़ने से उसकी ठीक-गलत की समझ नष्ट हो जाती है।

अहंकार – अपने को हर बात में आगे रखने, दिखावा करने और मैं-मैं की खुजली से परेशान रहने के कारण मानव जानते हुए भी ठीक बात का अनुसरण नहीं कर पाता पर असलियत खुलने पर सिर नीचा भी करना पड़ता है।

हठ – ज़िद्दी व्यक्ति अपनी ज़िद्द को प्रतिष्ठा का सवाल बना लेता है और उसे पूरा करने के लिए अनैतिकता की हद तक चला जाता है। परन्तु, ज़िद्द से कार्य सिद्ध नहीं होते, यह वास्तविकता है।

बदले की भावना – स्वयं को न बदलकर दूसरों के प्रति मन में वैर, अशुभ भावना पाल लेने से चित्त का चैन उड़ जाता है। दूसरे का बुरा करने

की योजना बनाते-बनाते व्यक्ति स्वयं बुराई की दलदल में सिर से पांव तक धंस जाता है और स्वयं का अहितकारक सिद्ध होता है।

कपट – अन्दर ज़हर रखकर, मुख पर अमृत का लेप करके चलने से अपने भी पराए बन जाते हैं। सबके विश्वास और सहानुभूति को खोकर व्यक्ति नितान्त अकेला पड़ जाता है।

क्रूरता – दूसरों को तड़फाकर, रुलाकर, सताकर पैशाचिक आनन्द लेने वाला, इन्सान का आवरण ओढ़े हैवान ही होता है। इस क्रूरता के चलते आज मानव, पशु, प्रकृति सभी असुरक्षित-से हो गए हैं।

कलह – शंका, अनुमान, दोषारोपण, परचिन्तन, तेरा-मेरा, झूठ, कामचोरी, फैशन, व्यसन आदि के कारण काम बिगड़ता, सम्बन्ध बिगड़ते, मन में क्लेश उत्पन्न होता और आस-पास का वातावरण भारी हो जाता है।

इन दस सिरों को काटने का तरीका है इनका पोषण करने वाले देहाभिमान रूपी कुण्ड को ज्ञान के तीरों से नष्ट कर देना। इसलिए निराकार राम (शिव परमात्मा) कहते हैं, मीठे बच्चे, अपने को देह से न्यारा आत्मा समझ मुझे याद करो तो मैं तुम्हें इन दसों पापों से मुक्त कर मुक्ति और जीवन्मुक्ति का वरदान प्रदान कर दूँगा।

❖

इसे दीवाली कहते हैं

ब्रह्माकुमार अवनीश, रेनूकुट, सोनभद्र (उ.प्र.)

सबकी सोई रूह जगे, सब रोशन हो जायें
मुर्झाये सबके चेहरे, फूलों-से खिल जायें
देव बनें हर नर-नारी, हम ऐसे सपने रखते हैं
सबकी आत्म-ज्योति जगे इसे दीवाली कहते हैं

पाप धरा से मिट जाये, सब पुण्य रूह कहलायें
अपनी पावन वृत्ति से कुदरत को शुद्ध बनायें
नवयुग ऐसा आ जाये, घी-दूध जहाँ पे बहते हैं
सबकी आत्म-ज्योति जगे इसे दीवाली कहते हैं

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह जरा नहीं रह पायें
निर्विकारिता सबमें हो, सब देवी-देव कहलाएं
उनको भी अधिकार मिले जो सबकी बातें सहते हैं
सबकी आत्म-ज्योति जगे इसे दीवाली कहते हैं

संगमयुग की याद यही शिव बाबा के आने की
शिव बाबा के राजयोग से अपनी रूह जगाने की
जो श्रीमत पर चलते हैं वे शिव के दिल में रहते हैं
सबकी आत्म-ज्योति जगे इसे दीवाली कहते हैं

नाचें-गायें-मौज करें, दीपों का पर्व मनायें
अपनी सूरत, सीरत से जग को राह दिखायें
राह दिखाने वाले भी स्वयं फ़रिश्ते होते हैं
सबकी आत्म-ज्योति जगे इसे दीवाली कहते हैं

शिव बाबा के बच्चे हैं हम ब्रह्मा के द्वारा
पाके उनको लगता है अब सारा जगत हमारा
संगम पे उनसे मिलके हम धन्य-धन्य हो जाते हैं
सबकी आत्म-ज्योति जगे इसे दीवाली कहते हैं